February 2015

IJRSS Volume 5, Issue 1 ISSN: 2249-2496

राजस्थानी लोक साहित्य में वर्षा विमर्ष

डॉ. जगजीत सिंह कविया
व्याख्याता समाजशास्त्र
राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू

परिचय –

लोक–साहित्य 'लोक' और 'साहित्य' दो शब्दों से मिलकर बना है जिसका शाब्दिक अर्थ लोक का साहित्य है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'लोक' की विशेषता के सम्बन्ध में लिखा है – ''लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम्य नहीं हैं, बल्कि नगरों या ग्रामों में फैली हुई समूची जनता है जिसके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियां नहीं हैं। ये लोग नगर में रहने वाले परिष्कृत रुचि सम्पन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते हैं और परिष्कृत रुचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारिता को जीवित रखने के लिए जो भी वस्तुएं आवश्यक होती हैं, उनको उत्पन्न करते हैं।''

'लोक' लोक जीवन के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अपनी प्राचीन मान्यताओं, विश्वासों और परम्पराओं के प्रति आस्थावान हैं। लोक–साहित्य मूलतः लोक की मौखिक अभिव्यक्ति है जो सम्पूर्ण जीवन का नेतृत्व करती है। लोक जीवन की अभिव्यक्ति को वाणी देना ही लोक साहित्य है। इसकी विधाओं में लोक–गीत, लोक–कथा, लोक–नाट्य और लोक–भाषा आदि प्रमुख है।

वर्षा का प्रभाव केवल भारतीय कृषि व्यवस्था, उद्योग और वातावरण पर ही नहीं पड़ता अपितु भारतीय लोक–साहित्य पर भी पड़ता है। वर्षा आने पर केवल दादुर ही नहीं टरटराते, मोर ही नहीं नाचते बल्कि भारतीय कृषक, युवक–युवतियां सभी उल्लासमय होकर नाचने–गाने लगती हैं, झूमने लगते हैं। इस आनन्द को, इस सपने को लोग झूमर, झूला, कजली, बारहमासा

आदि लोक–गीतों तथा जट–जटिन इत्यादि लोक नाटिका में अपनी वाणी देते हैं। फिर यह वाणी 'श्रुति–परम्परा' का अनुसरण करते हुए कण्ठ–कण्ठ से होकर समाज में व्याप्त हो जाती है। इन गीतों में स्वाभाविकता, सरलता, सहजता और स्वच्छता के गुणों का समावेश होता है।

हमारे प्राचीन ऋषियों ने, हमारे पूर्वजों ने और यहां तक कि साधारण–से अनपढ़ कहे जाने वाले किसानों ने अपने पर्यावरण को कितने ध्यान से समझा और तदनुकूल आचरण किया। हमारी अर्थ–व्यवस्था प्रमुखतः कृषि पर आधारित रही है। कृषि का सीधा सम्बन्ध वातावरण से है। इसलिए प्रकृति और वातावरण को कृषि के सम्बन्ध में विशेष रूप से समझने, उसके अन्दर होने वाले परिवर्तनों का सूक्ष्मता के साथ अवलोकन करने और घटित होने वाले परिणामों को जानने का प्रयास उन लोगों ने सदैव किया। उनकी निरीक्षण शक्ति के अनुभव में ऐसे–ऐसे सूत्र हाथ आए, जो सदैव हमारे समाज का मार्गदर्शन करते रहे। तब विज्ञान की इतनी प्रगति नहीं हुई थी। उन लोगों के ये अनुभव–सूत्र ही उनका विज्ञान थे।

ऋषि–मुनियों और साधारण मनुष्यों के इस सुदीर्घ चिन्तन–मनन तथा अनुभव ने लोकोक्तियों–कहावतों को जन्म दिया था। अब ये कहावतें धीरे–धीरे विलुप्त होती जा रही हैं। लोक–अनुभव की विशाल राशि में से हमने कुछ वर्षा की कहावतों को स्वर्ण–बालियों की तरह चुन कर एकत्र की हैं।

शोध पत्र में इन वर्षा कहावतों का वर्गीकरण व विवेचन प्रस्तुत किया है। हमें यह जानकर सर्वाधिक आश्चर्य होता है कि किस तरह एक सामान्य निरक्षर किसान प्रकृति या वातावरण के परिवर्तनों को लक्ष्य कर आगामी छह महीने की वर्षा होने या न होने, कम होने या अधिक होने का अनुमान लगा लेता है। यह प्रकृति ही उसकी प्रयोगशाला है, उसके आसपास रहने वाले कीट–पतंग, पशु–पक्षी, जीव–जन्तु ही उसके सहायक हैं। हवा का रुख, नमी, बादलों का रंग, आकाश का रंग, इन्द्रधनुष आदि को देखकर वह वर्षा का पूर्व अनुमान सहज ही लगा सकता हैं आधुनिक मौसम विज्ञान लघु आवर्ती (3 दिन तक की वर्षा का), मध्यम आवर्ती (4 से 10 दिन तक की वर्षा का) पूर्व अनुमान व्यक्त कर सकता है; किन्तु अधिकांशतः

हम सुनते हैं 'आगामी चौबीस घण्टे की वर्षा का पूर्व अनुमान है।' इसके विपरीत हमारे अनुभवी किसान लघु आवर्ती, मध्यम आवर्ती और दूरगामी (10 दिन से अधिक 6 महीने तक) वर्षा की भविष्यवाणी आसानी से कर सकते हैं।

पर्यावरण के प्रति इधर जो जागरुकता आई है, वह भय से प्रेरित है। मानव जीवन के अस्तित्व के संकट से जन्मी है। चिन्ता में डूबा मनुष्य आज यह सोचने को बाध्य हुआ है कि कैसे वह अपने पर्यावरण को बचाये कि पृथ्वी की रक्षा हो। हम आने वाली पीढ़ी को क्या सौपेंगे; इसका उत्तर हमारे पास है? लेकिन सुखद आश्चर्य तब होता है, जब हम पाते हैं कि हमारे पूर्वज अपने पर्यावरण के प्रति कितने जागरूक थे! कितनी सूक्ष्मता और गहराई से उन्होंने वातवारण में होने वाले परिवर्तनों पर ध्यान दिया था! उनके प्रत्येक कार्य के पीछे एक सहज चिन्तन विद्यमान था जो पर्यावरण से जुड़ा होता था।

हम ऋषि–मुनियों, मन्त्र द्रष्टा अथवा सिद्ध पुरुषों की बात नहीं कर रहे। हम बात कर रहे हैं साधारण जन की, किसानों की; जो औपचारिक शिक्षा से कोसों दूर प्रकृति की पाठशाला में पर्यावरण की किताब ध्यानपूर्वक पढ़ते रहे। अपने अनुभव से उन्होंने बहुत कुछ सीखा, जाना और अपने दीर्घकालीन अनुभव को समूचे समाज के लिए अर्पित किया। यह अनौपचारिक पर्यावरण शिक्षा पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक रूप से चली आ रही है। आज भी किसान उनकी अमूल्य बातों को अवसरानुकूल याद कर उपयोग में लाते हैं। वे नीति की बातें बन चुकी हैं। यह अनुभव सिद्ध बातें हैं, जो लोक–साहित्य अथवा समूचे लोकशास्त्र लोकवार्त्ता ;थ्सासवतमद्ध का अंग हैं। इनमें से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और हमारे क्षेत्र से समन्धित हैं–दीर्घ लोक–अनुभव से निकली कहावतें। विशेष रूप से वे कहावतें जो कृषि, वर्षा, ज्ञान, समाज आदि पक्षों से सम्बन्धित हैं। इनमें अधिकांश कहावतें ऐसी हैं, जो निरर्थक कहे कथन नहीं हैं, अपितु उनमें वैज्ञानिकता है, क्योंकि वे प्रत्यक्ष अनुभव की ठोस जमीन पर बनी हैं।

हम अपने दैनिक जीवन में कदम–कदम पर लोकोक्तियों, कहावतों और मुहावरों का प्रयोग करते हैं तथा सुनते हैं। यह स्थिति विश्व के सभी समाजों में है। इनके प्रयोग से

वाक्पटुता तो सिद्ध होती ही है, साथ ही एक सबक, एक दिशा–निर्देशन भी मिलता है। कारण कि लोकोक्तियों, कहावतों और मुहावरों में दीर्घकालीन संचित अनुभव बोलते हैं समाज के लम्बे अनुभव सूत्रबद्ध रहते हैं। कहा जाता है कि–कहावतें अनुभव की बेटी हैं। ;च्तवअमतइे ंतम जीम बैपसकतमद वि म्गचमतपमदबमद्ध इसीलिए किसी भी समाज के लोग इन्हें सत्य मानकर उनसे प्रकाश ग्रहण करते हैं। इसके मूल में यह धारणा भी रहती है कि 'लोकोक्तियां वार्तालाप में अंधकार में प्रकाशपुंज (टार्च) के समान हैं' ;च्तवअमतइे पे बवदअमतेंजपवद.ज्वनतबीमे पद कंतादमेद्ध अथवा 'लोकोक्तियां ज्ञान का पथ हैं'।

'लोकोक्ति' शब्द की व्युत्पति ही 'लोक+उक्ति' से हुई है। 'लोक' शब्द का अर्थ है दर्शन या देखने वाला। वह समस्त जनसमुदाय जो इस कार्य (देखने का कार्य) को करता है, 'लोक' कहलाता है। इस प्रकार 'लोकोक्ति' का शाब्दिक अर्थ हुआ लोक–प्रसिद्ध या लोक–प्रचलित उक्ति। अथवा लोक का कथन, लोक में प्रचलित, प्रसिद्ध कथन।

यों तो 'लोक' में तमाम तरह के 'कथन' प्रचलित होते हैं, लेकिन हर कथन 'लोकोक्ति' नहीं कहलाता। लोकोक्ति तो ऐसे विशेष कथन कहे जाते हैं, जिनका आधार मानवीय अनुभव, नियम, प्राचीन कथाएं हों, जो संक्षिप्त एवं सारगर्भित हों, जो लोकप्रिय हों और जिनका प्रयोग किसी बात की पुष्टि, समर्थन अथवा विरोध में किया जाता है। प्रसंग के अनुसार लोग ऐसे कथनों का प्रयोग चमत्कारपूर्ण ढंग से करते हैं।

'कहावत' शब्द 'कथावत' से निर्मित माना जाता हैं कथाओं की तरह कहावतें भी लोक प्रसिद्ध हैं। जिस तरह लोक में कथाएं (लोक कथाएं) लोकप्रिय थीं, उसी तरह ऐसे कथन भी लोकप्रिय थे जिनके माध्यम से कोई शिक्षा, कोई उपदेश, कोई ज्ञानवर्द्धक जानकारी तत्काल सूत्र रूप में दे दी जाती हैं। ऐसे संक्षिप्त, सारगर्भित कथन 'कहावत' कहलाते हैं। लोकोक्तियां अथवा कहावत के लोक–प्रचलन का कारण वास्तव में उनमें निहित मानवीय अनुभव, उनकी सत्यता, लोकहित की सदिच्छा हैं।

मुहावरा ;प्कपवउद्ध वाक्पद्धति हैं चमत्कारपूर्ण उक्ति है। यह किसी भाषा या व्यक्ति के अभिप्राय में मुद्रित, उनकी व्याकरणिक तथा तार्किक युक्तियों से विलक्षण वाक्यांश होता है। वह अपनी भाषा और भाषा–समाज की विशिष्टता का परिचायक होता है, जो किसी भाषा के लाक्षणिक एवं व्यंजनामूलक अर्थ में लोक–विश्रुत होकर रूढ हो गया हो। इस प्रकार लोकोक्ति, कहावत और मुहावरे समाज के अनुभव की सूत्रबद्ध अभिव्यक्ति हैं।

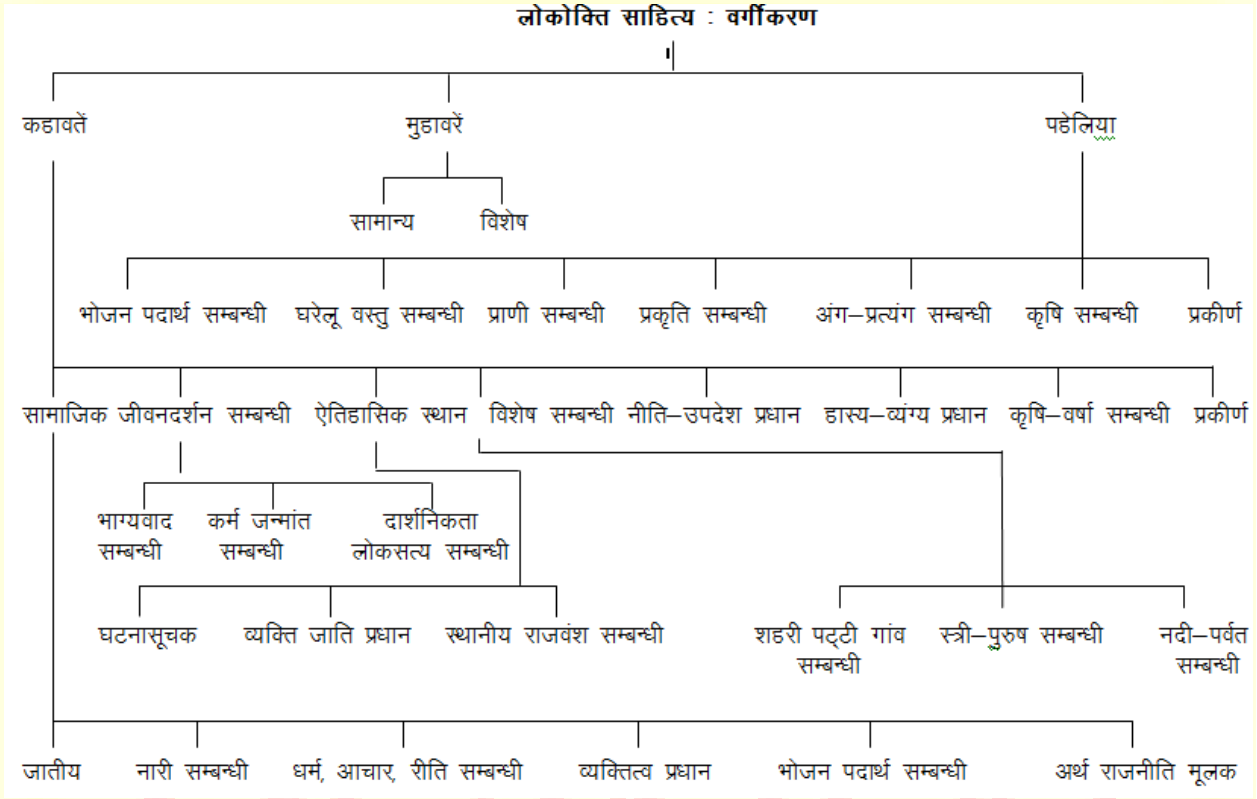

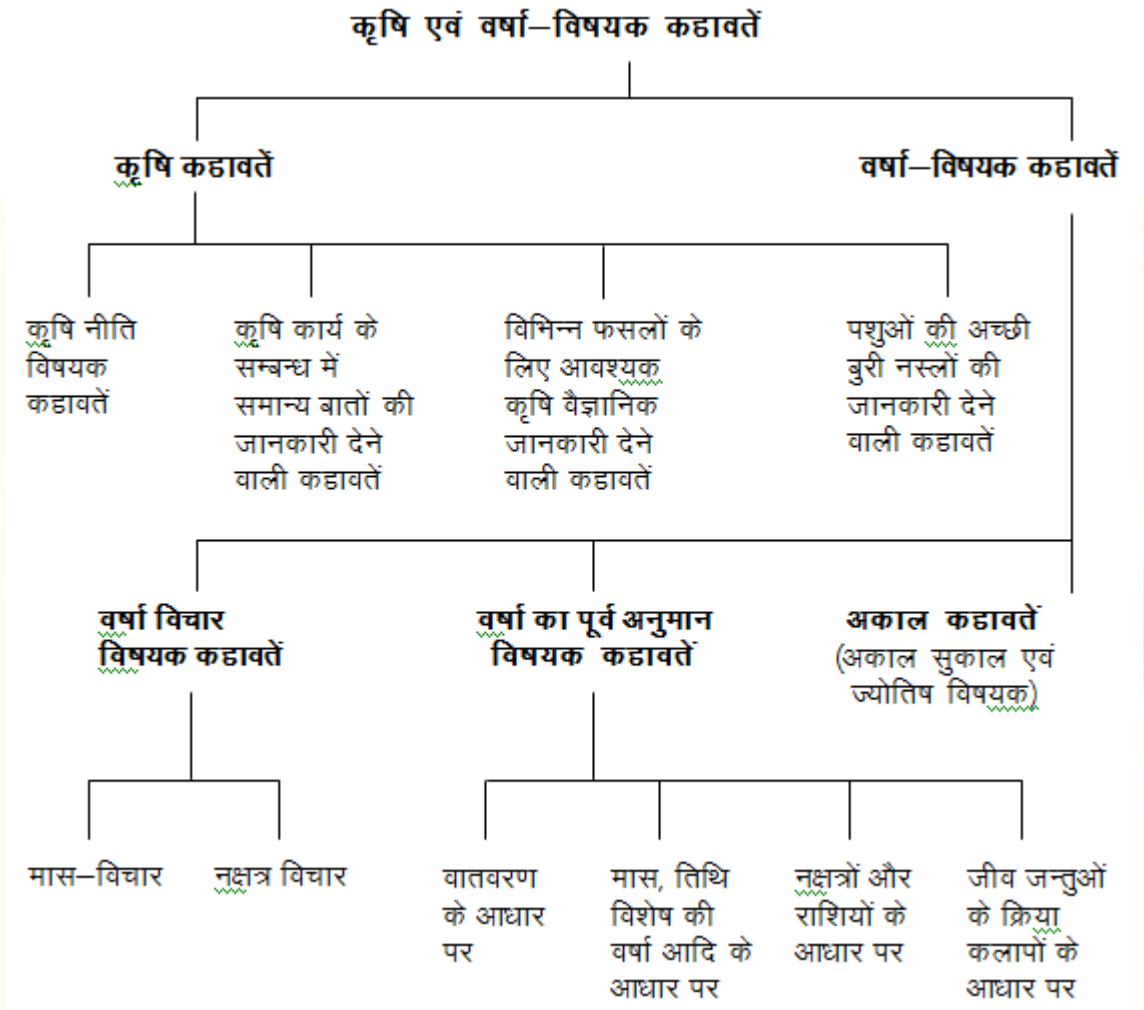

कहावतों का एक बहुत बड़ा हिस्सा वर्षा विषयक है। ऐसी कहावतों में वर्षा का पूर्व अनुमान, अतिवृष्टि–अनावृष्टि का पूर्व अनमान तथा विभिन्न समय में होने वाली वर्षा का फसल पर प्रभाव आदि की जानकारी सूत्रबद्ध है।

पर्यावरण के आधारभूत तत्वों, तापक्रम, वायु–प्रवाह की दिशा तथा ग्रह–नक्षत्रों की स्थिति–गति इत्यादि के सूक्ष्म पर्यवेक्षण की शक्ति ने इन अनुभव सिद्ध कहावतों को जन्म दिया है। वातावरण और अपने परिवेश के प्रति हमारे ग्रामीण जन कितने सचेत थे? इस तथ्य की पुष्टि इन कहावतों से हो जाती है।

वर्षा के सम्बन्ध में इन लगभग निरक्षर ग्रामीण किसानों का अनुभव बड़े ही काम का है। अनेक आश्चर्यजनक अनुभव–प्रसूत तथ्य के सहज–सरल भाषा में कहते दिखाई देते हैं। वे पौष, माघ से ही अगले वर्ष की वर्षा की भविष्यवाणी करने लगते हैं और बरसात के दिनों में आकाश का रंग, हवा का रुख, चींटी, गौरेया, बकरी, सियार, कुत्ता, मेंढ़क, सांप, गिरगिट तथा वनमुर्गी आदि जीवों के क्रियाकलापों को देखकर जान जाते हैं कि वर्षा होगी या नहीं। और कब होगी? कितनी होगी? वास्तव में यह उनका अन्धविश्वास नहीं हैं यह उनकी प्रकृति निरीक्षण की अद्‌भुत शक्ति का प्रमाण है।

यह तो विज्ञान भी स्वीकार करता है कि मौसम को नियन्त्रित करने वाली समस्त क्रियाओं का क्षेत्र पृथ्वी के (बाहर) ऊपर 10–12 कि.मी. तक रहता है। इन्हीं प्रक्रियाओं के फलस्वरूप बादलों का निर्माण, वायुमण्डलीय विद्युत का प्रकाशित होना, पानी गिरना आदि सम्भव होता है।

हमारा विचार है कि इसी परिप्रेक्ष्य में पशु–पक्षियों के क्रिया–कलापों का अध्ययन किया जाना चाहिए। यह सर्वविदित है, और विज्ञान भी स्वीकार करता है; कि अनेक जीव–जन्तुओं की प्राकृतिक घटनाओं के प्रति–विशेष संवेदनशीलता रहती है। उन्हें प्राकृतिक आपदाओं का पूर्वभास भी हो जाता है। उदाहरणस्वरूप भूकम्प आने के समाचार या हम भूकम्प अनुभव करें, इसके पहले ही गाय रंभाना या कुत्ते का भौंकना आदि आरम्भ हो जाता है। मरूस्थलों में भी ऊँट को तीव्र आंधी आने का आभास हो जाता है और व रेत के अन्दर मुँह डाल देते है।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में वर्षा के पूर्व अनुमान से सम्बन्धित उन कहावतों का विश्लेषण किया जा सकता है, जिनमें चिड़ियाओं, गिरगिट, सांप इत्यादि के असाधारण क्रिया–कलापों को देखकर वर्षा होने का अनुमान लगाया जाता है। (ये कहावतें आगे दी जा रही हैं)

ऋतु विज्ञान सम्बन्धी लोक साहित्य के प्रणेताओं में घाघ, डंक, भड्डरी, सहादेव, डक्क और मेघराज के नाम आते हैं।

आगम चौमासै लूंकड़ी, जे नहीं खोदै गेह।

तो निस्चै करके जाण जो, नहीं बरसेलो मेह।।

वर्षा काल से पूर्व यदि लोमड़ी अपनी 'घुरी' न खोदे तो जानो कि इस बार वर्षा नहीं होगी।

आधै आभै मांय नै, इन्द्रधनुष जे होय

बरखा आछी होवसी, सोच करो मत कोय।

आधे आकाश में यदि इन्द्रधनुष छा जाय तो वर्षा अच्छी होगी चिन्ता करने की कोई बात नहीं है।

आफू नोसादर नमक, गुड़ जद गीलो होय

नहचै बरखा होवसी, सोच करो मत कोय।

अफीम, नौसादार, नमक और गुड़ जब गीला हो तो निश्चित ही वर्षा होगी। किसी को संशय या चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।

आसोजां में पिछवा चाली,

भर–भर गाडा ल्याई।

यदि अश्विन में पश्चिम की हवा चले तो मूसलाधार वर्षा होगी।

ऊंचों नाग चढ़ै तर ओड़े, दिस पिछमांण बादळा दौड़े।

यदि सांप पेड़ की चोटी पर चढ़े, मेघ पश्चिम दिशा को दौड़े, सारसों के जोड़े आसमान में उड़े तो नदी का पानी किनारों को तोड़ कर बहेगा।

कीडी कण असाढ़ में, मांय ले जाती देख।

तो अन्न तृण रो काल व्है, इण में मीन न मेख।

आसाढ़ मास में यदि चींटियां अन्न के कणों को अपने बिलों से बाहर निकाल कर डाले तो खूब वर्षा होगी।

गांव मांय तो कूकरा, रोही मांय सियाळ।

अैजे रोवै तो पड़ै, गो हत्यारों काळ।।

यदि गांव में रात्रि को कुत्ते और जंगल में सियार रोने लगे तो वर्षा नहीं होगी। घोर अकाल पड़ेगा।

चिड़िया झीले रेत मा, कांसी करे काट।
ऐहरू ठांसे चढ़े, दही गळे माट।।

चिड़िया रेत में नहाए, कांसी के बर्तन को जंग लगे, सांप पेड़ों पर चढ़े व दही पर मक्खन गलने लगे, तो बारिश होगी। ये वर्षा होने का संकेत है।

छह ग्रह एक रास पर आवै।
महाकाळ नै नंत र लावै।।

एक राशि पर छः ग्रह एकत्र हो तो घोर दुर्भिक्ष पड़गो अथवा महा विनाश होगा।

जटा बधे बड़ री जब जांणां, बादल तीतर पंख बखांणां
अवस नील रंग के असमाणां, घण बरसे जल रो घमसाणां।।

जब बरगद की जटा बढ़ने लगे और बादल का रंग तीतर के पंख जैसा हो जाय या आसमान का रंग बिल्कुल नीला हो जाय तो अवश्य खूब वर्षा होगी।

जे पुरवा लावै पुरवाई,
तो सुखी नदियां नाव चलाई।

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र पर सूर्य के रहते हुए पुरवा हवा चले तो इतनी अधिक वर्षा हो कि सूखी नदियों में भी नावें चलने लगे।

तीतर पंखी वादळी, विधवा काजळ रेख
बा बरसै बा घर करै, ई मे मीन न मेख।।

यदि तीतर पंखी वादळी हो (तीतर के पांखों जैसा बादलों का रंग हो) तो वह जरूर बरसेगी। विधवा स्त्री की आंख में काजल की रेख दिखाई दे तो समझना चाहिए कि अवश्य ही नया घर बसायेगी, इसमें कुछ भी संदेह नहीं।

तरै दिनां रो होवै पाख

अन मूंघौ होवै बैशाखा।

जिस पखवाड़े दो तिथियों का क्षय हो जाय और पन्द्रह दिन की बजाय तेरह दिन का पखवाड़ा हो तो वैशाख माह में अन्न महंगा होगा। दुर्भिक्ष पड़ने की सम्भावना बढ़ेगी।

काती रो मेह, कटक बराबर।।

कार्तिक मास में होने वाली वर्षा खेती के लिए वैसे ही हानिकाकर है, जैसी सेना!

नाड़ी जल ह्वै तातो न्हाली।

थिरक रवै नीलो रंग थाली।।

चहक बैठ सीरे चूंचाली।

कांटल बंधे उतर दिस काली।।

जिण दिन नीली जले जबासी।

मांड़े राड़ बाघ री मांसी।।

बादल रहे रात रा बासी।

तो जाणो चौकस मेह आसी।।

तालाब का पानी गर्म हो जाए, कांसे की थाली का रंग नीला पड़ जाए, पनडुबी (जलमुर्गी पक्षी) पेड़ पर चढ़कर बोले; उत्तर दिशा में काली घटा घिरे; हरा जवांसा (कांटेदार पौधा) जल जाय; बिल्लियां लड़ें और रात में घिरे बादल सबेरे तक घिरे रहें; तो समझना (अच्छी वर्षा) अवश्य होगी।

गले अमर गुलरी ह्वै गारी।

रवि सिसरे दोली कुंडारी।।

सुरपत धनख करै बिध सारी।

ऐरावत मघवा असवारी।।

अफीम गलने लगे, गुड़ में पानी छूटने लगे, सूर्य और चन्द्रमा के चारों ओर कुण्डली हो और इन्द्रधनुष पूरा दिखाई दे, तो इन्द्र ऐरावत पर चढ़कर आयेंगे! अर्थात् तेज वर्षा होगी।

मंगलवारी होय दिवारी।

हँसै किसान रावै व्यापारी।।

दीपावली यदि मंगलवार के दिन हो; तो फसल अच्छी होगी फलतः किसान खुश होंगे और व्यापारी रोयेंगे (उन्हें लाभ कम होगा)।

दो सांवण दो भादवा, दो कातिक दो मा

ढांडा–ढोरी बेचकर, नाज बिसावण जा।।

जिस वर्ष श्रावण, भाद्रपद, कार्तिक और माघ के दो महीने पड़ेंगे, उस वर्ष भयंकर अकाल पड़ेगा। पशु आदि बेचकर अनाज खरीदना पड़ेगा।

नींबोली सूकै नीम पर, पडे न नीचे आय

अन्न न नीपजै एक कण, काल पड़ेगो आय।।

यदि नीम की नींबोली वृक्ष पर ही सूख जाए और पक कर नीचे न गिरे, तो अकाल पड़ेगा।

पग पूंगल धड़ मेड़ता, उदर बाहड़मेर।

भूल्यो भट्कयो जोधपुर, ठावो जैसलमेर।।

काल का पांव पूंगल, धड़ मेड़ता और पेट बाड़मेर है। कभी–कभार भूल से जोधपुर और निश्चित जगह जैसलमेर है।

परभाते पपीहिया बोले, सिंजा बोले मोर।

इन्दर बरसण आवियो, नदियां तोड़े धोर।।

सुबह के समय पपीहा बोले, शाम को मोर नाचे तो वर्षा आने की सम्भावना है। नदियां टीबों को तोड़ देती है।

परवा ऊपर पछवा फिरै।

तो घर बैठी पणिहार भरै।।

पुरवाई के पीछे यदि पछुआ हवा चले तो शीघ्र ही वर्षा होगी और पनिहारिन को पनघट जाने की जरूरत नहीं क्योंकि, वह घर बैठे ही पानी भर लेगी। जब पुरवा से पिछवा चलने लगती है तो बहुत जोरों की वर्षा होती है।

मघा रो बरसणौ, अर मां रो परूसणौ।

मघा नक्षत्र में होने वाली बरसात मां के परोसने के समान संतोषकारी व हर्षदायक होती है।

माघ मंगल जेठ रवि, भादरवे सनि होय।

कवि कहे हे जनमानुष, बिरला जीवे कोय।।

यदि माघ मास में पांच मंगलवार हों, जेठ माह में पांच इतवार एवं भादवे माह में पांच शनिवार, तो अकाल होगा, बहुत कम लोक ही जीवित बच पायेंगे।

सूरज कुंड अर चांद जलेरी,

टूटा टीबा भरगी डेरी

यदि सूर्य के चारों ओर कुंड (घेरा) वैसे ही चन्द्रमा के चारों ओर जलेरी जो तो इतनी जोरों की वर्षा होती है कि टीले टूट–टूट कर पानी के साथ बह जाायेंगे और सरोवर जल से परिपूर्ण हो जायेंगे।

दरअसल यह सब कहावतें अब 'लोक' की धरोहर हैं और लोक साहित्य का स्वर्णिम अध्याय हैं। इन लोकोपयोगी कहावतों को पर्यावरण के विशेष सन्दर्भ में देखने की आवश्यकता नये सिरे से पैदा हो गई है। इस लोक सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण हमारा, आपका, सबका दायित्व है।

संदर्भ पुस्तकें :–

1. राजस्थानी कहावतों में वर्षा, डॉ. विक्रम सिंह राठौड, पब्लि राजस्थानी ग्रन्थागार।
2. राजस्थानी कहावत कोष, गोविन्द अग्रवाल, हिन्दी साहित्य संम्मेलन, प्रयाग
3. राजस्थानी लोक साहित्य का सैद्वान्तिक विवेचन, डॉ. सोहन दास चारण, पब्लि राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर।
4. लोक सांस्कृतिक परम्परा एक अनुषीलन, डॉ. महिपाल सिंह राठौड, पब्लि राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर।
5. राजस्थानी लोक साहित्य, नानूराम संस्कर्ता, पब्लि राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर।
6. लोक साहित्य विज्ञान, डॉ. सत्येन्द्र, पब्लि राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर।
7. राजस्थान का लोक साहित्य, नानूराम संस्कर्ता, पब्लि राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर।
8. लोक सम्पादक, पीयूस दईया, पब्लि – भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर।
9. लोक संस्कृति व अन्य निबन्ध, डॉ. रामप्रसाद दाधीच, पब्लि राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर।